## याज्याक १%

892

न्ति याडाहि

2M6 48 31 NO 48

Mss. in the Ress

एडाउँए त उट्टाइत स्थाताला स्थाताला स्थाताला स्थाताला स्थाताला

৫৬/১, মহাস্থা গান্ধী রোড, কলকাডা-১

2 of The offen of , & आधीय-अधीत-प्र च्रिकार स्था अस्तिक Mars and रूपात्री अन्यस्यं क कि कार्यन

## MENERIE -

सार्वातम, वृद्यातम् तारम मयस्त्राताः । स्टब्स, ए तम्मान्त्र, अतन्त्र- काञ्चात् कानीशृष्टिं वृष्यं । काञ्चानमात्र्यं मद्यातम्, मत्र प्रेम, मत्र श्रूम ; क्याता बुध्य ग्रम कान्यात्र भारत्र श्रम्भात्र । क्यायुक्तमात्र भारतात्र काञ्च ब्यायात्र । क्यायुक्तमात्र कार्यस्त्रित्तिक हात्र भद्रमधी श्रीन । क्रित्रं शुक्रमात्मादक लांदलं यायम अपन क्रियुक्ट क्र ंक्रम. में के क्रियूक्ट। ध्रम के मोंचं के कास उद्गेरिश। काम केंप्रत करवाक अपन क्रियूक हिट्टा लाग केंप्रत हुं ध्रम के किंप्रत क्रियूक व्युक्रिश । काम केंप्रत करवाक अपन क्रियूक हिट्टा लाग केंप्रत हुं ध्रम के किंप्रत क्रियूक क्रियुक सुवापंत क्रियूक क्रियूक

उत्तर राजिक

वार्षण्येतं यात्रंश स्टब्स् रेषणाटा रेश क्षेत्रं ग्रेस्टिन्सं तूषि सर्वेश्य जात्र क्षेणं संख्य क्षेत्रं आधारं रहणा।

प्रेट्य यात्रं तरं तरंग्रे स्योद्यायं रिमांचे क्रीलंक्संयता।

# space #

१ रहाम् हे हार भार रहन

र्केश कुष्ट लाप वेषद्वम् एश्व कार्छ।

माराख्य अवेष्ट्रत प्रत्म । क्रिमिर्मां क्रालविंद काल प्रत्यं क्षण हें दिय आंग्र ; क्या स्पूर्णा त्राक्षां दक्ष हि दक्षपद्धं वेश्वणं क्रिपंत्रं क्या राजा । स्प्या पात्र विष्ण्य लांदा, देश स्पूर्णा उरणाकां शिरांद्रांद्रं विश्व ग्रीविंद्रीं श्रिताकार दक्षाद्वांद्र शहिह प्रशिप्ता भिष्टिं शास्त्र वोष्ट्रमां कर्ने कर्ने क्षित्र क्षित्र मार्ग हिन्दे मार्ग क्ष्रांकेड भिष्टिंग प्रेंग क्ष्री कर्ण्या एसु हिल्प क्षांत्रकेत केरिये। मार्ग्य हिल्प क्षांत्रींका-हिल्प प्रकारक क्षेत्रमांत्रके कार्य हिल्प क्ष्रमांत्रके कार्य क्ष्रमांत्रके कार्य कार्य

त्यां, स्थाण सामकावीतं अन्य स्मेयवंत करतं प्रत्य अध्यतं आक्त खुर्णे मार्थेन क्षेट्य पा।

त्यां, स्थाण सामकावीतं अन्य स्थितं प्राप्त क्षेत्रं स्थापं स्यापं स्थापं स्यापं स्थापं स्थापं

क्षित अर्थिं था। क्षित अंते क्षित्यं प्रतं विषयं विषयं क्षित्यं क्षितं क्षितं

प्रस्ता अमेशुंच अपट अंस्टिस्स । भ्रम्य अपेश हिया वृह अंत्रिसकारंग ।

वास्त्रक्षंत्र कांग गणा आहे साम्यां स्टाम क्षेत्र क्षेत्र वंशा । वासमाव

उपातम अरण्ड, या अरण्डं ध्यमा क्षेत्रांच क्रेक्टर क्षेत्र शिराष्ट्र इंटर्सिंग अंक्टिंग । वेड्रे मिक्ष कंष्य । मिक्षडं एकं हिंदर्स ब्रोडं पेश श्लिप्टिंग इंट्सिंग के उत्ति सिम्मेर्ष्येषं में में - प्यमानक त्यमाम मं इंप्ति ब्रामं। मार्च्यपं पेल-प्राणंत्र्य भएइ द्वादम सम्प्राण्डने मांच्या क्षेत्र व्यक्त स्थित व्यक्ति प्रक्त प्रक्रां मां मीन्य

अस्यस अर्थक्य अस्यक्ष्म । विद्या श्रित्य रेट्यक्ष्यं यास्त्रा निक्यं विद्या अस्त्रित क्ष्यं विद्या अस्त्रित क्ष्यं विद्या अस्त्र क्ष्यं क्ष्य

आहे की मार 3 क्षेत्र हिंह राज्ये हिंह साथ हिंदी एका हिंदी हैंगे, हैरेंगे हिंदी साथ है हैंगे हैरेंगे हिंदी साथ है हैंगे

क्रीए । क्रिया कार्रेप एडं ! (ब्रथ्निरक्त एड़। केंड मास्त्रित क्रियाक्ट क्

भारति में भक्षा की मा यहात मान्य । तिल जनारम क्षेत्र प्रकार मारं निर्मा में प्रमाण निर्मा में प्रमाण निर्मा के मार्थ निर्माण निर्माण

भारती (गा कार्य, त्व (अप्रामा : (तर्म) अप्यन अपृत स्था कुर धर्म मारा । त्या प्र प्रमणेषु -अभ्यत्य अभ्यत्यमं प्रमण त्रांता । क्षित्र (क्ष्मणं क्षेत्रकृष कार्यम । त्या कार्यम् क्ष्मण्येत्र शित्र अप्या । त्या अप्या क्ष्मण्यां अप्राप्त कार्य क्ष्मणे (त्या विष्टि वेत्रप्त) (द्याम मामाप्रमं कार्मण्येत्र भेत यमा मस्ति अपेत्रमें कुर्म व्राप्त स्था हार्य स्थाम। त्या क्ष्मणं क्ष्मणं व्या मारिकाम्बर क्षेत्र का किन्ड कार गरे हेन्स कारान शर्म श्री श्रमित का दिन-

अक्टरमां क्रिक्स क्रि

ब्यु मक्टर बुने मेंगीए उट्यात। क्रिसी एरमान्द्रामं हिम ज्याने मा क्रियार ने आसा (क्रिम खाया)। उत्पासन् क्रियान सेमान्य सेमान्य माने सामायां मने सिन्ध द्राप्त प्राप्त मेंग्यं क्रिया स्थापन क्रियान क्रियान क्ष्रीयां क्ष्रीयां मने सिन्ध क्रिया प्राप्त क्रियां स्थित क्ष्रीयां क्रियां माने समी क्ष्री क्रियां माने द्राप्त क्रियां क्ष्रीय क्रियां क्रियं क्रियां क्रियां क्रियां क्रियं क

अर्थाठकाका द्रारात्र । एडाएमामा अस्ट्री कार्याक्षित्र । भा। यवेश्वित है। दिया। उत्यक्तिक उपसे तथ होते आदे हाय हात्र । वर्षेत्रा तापा कार्य पात्रे (तार्या तारा रहारिय । रिक्ट्र १३ मा क्षेत्र सात्र) हिक्टेशा अद्युव एव एका कार्य पात्रे (तार्या तारा रहारिय । रिक्ट्र १३ मा क्षेत्र सात्र) हिक्टेशा आद्ये एपा (यहा खिर । अध्यत प्रुट्ट नयं 'अध्याचे अख्यां केन्यं की च्यां । वेस्त्रे दर्वता । सम्बर्ग मा क्यां क्षियं अख्या एक एप प्रका त्यां अस्तु क्ष्या पुम्पर्यं क्षियां क्ष्यां क्ष्यां

मरवह किर भक्तरकता।

त्म कर्ति क्ष्य विक प्रक प्रकार कार्यात हो होते विक्रिय क्षित क्ष्या कर्ता में My child,

- Very nice. Sive. It is -

हिंगी अपांड माडवट मारे । प्रकास तारेर - हम, ल myer '- who cycles का आड़ा

अग्र न किया हिंद कार्य कार कार्य का

उत्यालने (प्रमानी त्यं वर्ष क्षित्रम्न) विश्वे श्रमित्र ।

पु' कर्व भरवंद बना।

डिएएक - में हैंड कू (आक)। कू (आक)। (एए ऐस्ट) ' देन क्रिकां 3 छे| एक मध्ये (पूर्ण एए एस्टंड प्रेम एक हान्य है। आप अने प्रेस क्रिकां क्

किए एट साख्य ऋडं केपट्य - ५५ एत सिट्स अर्धिएएए क्षिम प्रमु ग्रेक्स अर्थावं क्ष्मीतु सम्बुक्तरं क्ष्मिक अर्थावं क्षिम् अर्थित क्षिम् प्रस्ति। अर्था अर्था क्षिम स्थाप्त स्था

स्पेशत काराम् । ।

स्पेशत काराम् । यादमां कार विश्वारकं कार मिल के कार्य के के कार्य के स्थाद आक्रांक के के स्थाद आक्रांक के स्थाद काराम काराम के स्थाद काराम के स्थाद काराम के स्थाद काराम काराम के स्थाद काराम के स्थाद काराम कार

ज्या जा करिन्द निर्देश निर्देश कर्षा हुत । किन्त्रे आरत दादा आसात्त्व

अशिद तुड़ा (पु सक क्षेत्र क्रांस (ताक रिकेट क्रंस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रिस) क्रांस क्रिस क्रांस क्रिस क्रांस क्

अलाउन हिटा हाकारें में। कार्यान दुक्त क्षिती कार्या हुक्त हुक्त कर कार्या हुक्त कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या हुक्त कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या हुक्त कार्या कार्या

क्ष्मी गणंत - विदेशात शिर इंस्पल क्षियिष्टिम । वेड मास्त्री वेक्षा वांडे एएम (तांवेश प्रें विकास क्रांडिस । खात थीएम क्षेट न्यावृत्त क्षेट्रेस क्षेत्र क्षिय क्षेत्र - व्यक्त मिलाइड ज्यांडे जांकुत्तर प्रमाद क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त पादक विकास क्षेत्र क्षे अपंत लेड्डुमंद हिंदम ।

अपंत लेड्डुमंद हिंदम ।

अपंत लेड्डुमंद हिंदम ।

अपंत लेड्डुमंद हिंदम ।

अपंत क्षेत्र क्षेत्र

इंश्लिड अग्रमारिश आइड़। उत्परम्य विषय क्षेत्र क्षेत्र के विषय का का विषय । अविष्टिषं क्रांत मात्र वर्षेत्। १० त्या दिए एक भ्रायकां स्थित भागां क्षित्यामा में त्या त्यक मात्य तर्मात रायातमात्यं में मात्य अधिकारचंड अधूरी खंडा सिर्ध्य आंड अयो मेड् स्टिल्ट्ड क्षिणंड क्षेत्र ३ रास्प्रकार ए प्रमण्ड अक्षारं और इष्ट प्रधं सिराम। सासाई। अप्यां उत्परं उत्पर अपन अपने ज्यांच क्लंबिक, व्राप्तं उपार (जादक ईंदवं आध्यम त्यादक अप्रमाकंत्र त्यात्यमं एन क्षित्रपतंत्रं 1 प्रतायम अस्ति क्षां क्षां प्रता प्रताय अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति । कारण के विकार विकार के अध्यक अपन अविकार के अविकार । मूर्य के DUNG ALALS GREGO SMUN CALON SNEWS (291 -

अथा-थि त्रेयपं वाष्ट अव्याता विष्णु अव्यात हिया आहा वाकुर्य यें ति । अपमारं द्राया प्रता अपने में के में क्षिया के क्षिया याता के कि ट्यालार दिल्ली क्रीय दिव्या कार्य क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र र्वत्यंति करामा , व्याप्त त्यामा व्यक्षे स्टा दिल्ल प्रथम मिलते द्वान व्यक्त स्थापिति। मासिएक देवं उष्ट्राटर कार्यायक कार्यहितार अपने हेति अवेश में मायांग त्यार मिन्नायं स्मिक्टिया , मन प्रवेष क्रांटाड काराय हिस्से ही स्थित अरव में कि का मान्य । अरव प्रवे योग पाटन करने अंचे योग अग्रेस में प्रांतुमंत्र कार्ट्य त्यानाल स्थानाय । क्षाण म मिरंगु क्यांक इंडिंग चारं डिलां नेरंगु स्थाए थाएए। कारती होते हैं जिल्ला कार कार कार कार कार किया हिन्द मार्थित और साहर मार्थित है। हिंद द्वार क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका है। क्षित्र क्षित्र

त्य (यूप्त ड्रिफ्टिय) अदेविक आप्रीयं अपित्रिय - ५०११य टि.स द्राव्ये प्रश्च १८०४ - एमड्र अम्मप्टी बार्वे व्यक्ते अदेविक आप्रीयं अपित्रिय - ५०१४य टि.स द्राव्ये प्रश्च १८०५ व्यक्ते व्यक्ते व्यक्ते व्यक्ते व्यक्ते व्यक्ते व्यक् आस्प्रीय भवर आग्रिय व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ते व्यक्ते व्यक्ति व्यक्ति प्राप्ति भवन अभिया

प्रमन्। स्योग्धं द्यात।

आरण अवश्यक् कर काएटा।

अवव्य कुछं वर 3 स्ट्रिंड कुष्ट श्रीर अभित्रंड क्रिंट्स विक्रान्तिक करणे दुक्ति । लांक मापि- सिकु सामान्य ' में कि व्याप्त में में में में कि क्रिंड क्रिंड क्रिंड में में में कि क्रिंड क्रिंड क्रिंड क्रिंड में में में में कि क्रिंड क्रिंड

वापो भक्ष आक्रांवाक्ष्य कार्व क्यांगालाय । वृत्ति अक्ष्य प्रक्याय क्ष्याव्यक्षि में के क्रेम्कांगा है ताक्ष अविक्रम वार्व क्षिमं । क्ष्यव्यक्ति व्यक्त अवेश्वमं भव्यं विक्रमं क्ष्यं विक्रमं क्ष्यं व्यक्ति क्ष्यं भव्यक्त १ कर्ट्यं क्ष्य क्षेट्रमं द्वां क्यांग्ये क्ष्यं भें भरं ग्रोमास्त्रीं क्राइकण्या।

खिर केलां के आप त्याताना ताराय।

क्षित क्षित्र क्षित्

पासा विक्रिंग क्रांबिट्टं । क्रेंगडा इट्टं । अद्रुकाक स्पळ्टाचं टिक्टें स्टंट्स स्मिन्तुं ज क्रेंब्ट्डिंग्य क्रेंब्ट्टिंग्यं क्रिंक्ट्रं क्रेंब्ट्टिंग्यं क्रिंब्ट्टिंग्यं क्रेंब्ट्टिंग्यं क्रिंब्ट्टिंग्यं क्रिंब्ट्टिंग्यं क्रेंब्ट्टिंग्यं क्रिंब्ट्टिंग्यं क्रिंब्टिंग्यं क्रिंब्ट्टिंग्यं क्रिंब्ट्टिंग्यं क्रिंब्ट्टिंग्यं क्रिंब्ट्टिंग्यं क्रिंब्ट्टिंग्यं क्रिंव्यं क्रिंव्यं

कार्युक्त में क्षिप्र मार्यक्त दृष्ट्याम - प्रदृष्ट (एक स्थित करहे प्रक्रक्ट 1 प्रक्रिक दृश्यामं व विभाग क्षिप्र मार्यक्त दृष्ट्यांच स्थार्ट्ड क्षिप्रमाण मन्त्रीय क्षिप्र मार्यक्त प्रदेश प्रक्रिय क्ष्मिय क्ष्मिय क्षिप्र मार्यक्त प्रदृश्चिम - प्रदृष्ट क्षिप्र मार्यक्त व्यव प्राप्तक प्रदेश १ क्ष्मिय क्ष्मिय अर्थित अरुअं अभागं शिर् डीमा ऋदिस्थि। भे ज्युवार केम्प इप्नेस्थि। ५६ उन्तर ज्याद्वा अपनेस्कु ज्युवा (अन् अपने क्षेत्रा । राष्ट्र ३ ८६८मां (गये अनेवं क्षियि प्रदेश हैम । क्रियंद अभ्याप्त्याद द्वांव

रिष्टे मेरिए के प्यायुर्व है। के के प्रमां अकाप अर्वेशियं रीड स्त्र ड्यंस्य। अब व्यं समायंत्र उत्तंत्य। स्पि टिपाट दिया दिया स्थारको स्थाता बर्धा अस नद्रकः बोकारं मा। मामद स्मिन कर प्रयो होन ग्यामध्य व्यानापट अक्टिम । प्राक्षित पिट लिए क्रिकेट क्षेत्र मानुबट मानदिन म भय साप्त हिंद्य हायत स्मकृत्व नाहत्वर म । कता नेकरा वाड विषयं में रेड कत्र प्रबंध इक्षिय। अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र क्षियं भागनेक्ष मिले एक्षियं : म अरोग्नाद हिंग आसारा हा एड्डा डाइट्रांड दीवय म्डक्टां में मबद व माविदेव अपनं । त्यान धाम्में अर्थमं अर्था ने कर्य के सहस अर्थ द्वित क्षिय ने क्ष्य के माम्मिक्षे केर 3 यात्र आनं मक्या ने कान मा नार मानी त्रमणे रेक प्राप्ति विक्रिया गामन - यह हिंग विकास कारात्। कार मुख्ये व्यक्तानामा हिंगात्र, क्रियानं थमी दूरि कात्रारं थात्रा-अर्थाता थिया। किया प्रध प्रथरि नेमार दूरि र्पत्रवंति क्रिसीटिंड अपने म्यार्ट्य । सार्ट्य त्राहे कार ज्ञास दिन एक यह देखा। सा द्या कामेर यदं एउनाइं धारायमाइएउं क्येक्पर् यसु स्था कारमा या क्येटा। आका अपर रिमेरिक ज्याराम, मार्ची नार्या के में अर्था हिंसी किर्देश हिम त्राप्त अध्यात । अपेश्वर का कार्य एते। मन्द्राई सीह केर्मि भारत क्षाप उपम्पानं अस्म का कह त्याद काम में बाद होने क्षाक हिएगा

42

Travers 2

मा टिक्ट मा अयो के विक्रमा भेट्र असिता अस्टिक अस्टिक प्रांत क्रिक अस्टिक अस्टि

किर्भक्तावा स्टारिय।

भाषामी (क्लिकंट क्ले) कडीअप क्षिमामा, अपारित अभिकंकित एडिट्र। अप अपिता । व्यु का वेद अन्माप (माक अभ डक्कां प्रमे आहा दुर्ज प्राप्त भिष्टिय मास्टिय क्षेत्रीअप क्षेत्र क्रिकं प्रमे अपने क्ष्ये कावं क्ष्ये क

विताल भिञ्चितिल्य क्रावनीय दित त्रिण्यामा।

अदीश्वक जिलाके भून रास्त्रि आजीत्मा आक्रीय।

सिरक क्रेंट्यिहिंगर, एने मुख्यार केर्ने क्षामा मेंच्यार । अने वाधा वाप माहिन-एएट कमा।

विप्ति क्रियार अव्यवित्मार एम्प मेंच्यार मेर्ने क्ष्ये - एक्टरेक्टर उ क्रेंट्यिस- एएट क्रिक्टर मेर्ने क्ष्ये क

किस्मिक कं कुड़ घटमान कुटड़ लागाड़ कांक। कोरा का कुड़ का कुड़ का कुड़ का कुड़ का कुड़ का का का का का का का का कु एए घट्य पट्ट ता कुड़ का हिएए। किरास मानड़ आकुड़ा ताड़ का कुड़ के क का कुड़ा कुड़ा कुछ कुछं कुछ कुड़ा कुड़ा कुड़ा का कुड़ा का कुड़ा का कुड़ा का का का का कुड़ा कुड़ा कुड़ा कुड़ा कुड़ा का कुड़ा का कुड़ा कुड़ा का का कुड़ा का कुड़ा कुड़ा कुड़ा कुड़ा का कुड़ा का कुड़ा कुड़ा का कुड़ा कुड़ा कुड़ा कुड़ा कुड़ा कि कुड़ा कि कुड़ा कुड़ा कुड़ा कुड़ा कुड़ा का कुड़ा कुड़ा

टिम स्मार्थि एक्षण्यां (खुर ह्येट्रं मुंखं के क्षिर्यण । आयं। 'खियां अप्ता एए एप हिम स्मार्थि एक्षण्यां (खुर ह्येट्रं मुंखं के क्षिर्यण । आयं। 'खियां अप्ता एए एप

- गामी श्राप्त अधिकां केष्र हुड वाड 'कार्य 'या केर ह

रिक्ती हिन्छ। अव्यान क्षिण क्षिण नेत्र उत्यंदि अं। व्यान क्ष्य हिन्दि व्यान अतः, - व्यान क्ष्या । व्यान क्ष्या । व्या क्ष्ये वायत्य क्षया महिन विनाद क्ष्येन

- रिक्ट विस्ते अधिकां उत्तर कार्य कार्य करिया कि

# Staca#

कराय श्रितक्य। योश्रीक्कं मैलक्सांगहं उंतिष्ट्यं द्याप्ट्यं क्याचां क्याक्षितं व्याप्टितं व्याप्टितं व्याप्टितं व्याप्टितं व्याप्टितं व्याप्टितं क्याक्ष्यं व्याप्टितं व्याप्याप्टितं व्याप्टितं व्याप्टितं व्याप्याप्याप्ट

कात क्षेत्रम भ्रेन्नायु च्या अस्त अस्त भ्रायक्ष्य। विष्युरेत्रपत्रं तात त्यात्मितां रिक्या भ्रेस स्टिंगिय। अवस्त वृदे स्चार्भेत्रवं

कार्रिका । पाक्रीया स्टिस्ट का क्ट्रंड दुरंगकड़ केल्या क्लिंग्य जाव्य करेंग एक्सिव प्रमुक्ति सेट्रं क्लेड्रं अक्षि कर्डा केल्या का स्टिस्ट्या । आफ्राल सेट्रंड क्लेड्रं । शिर एं सेडंड आप्ट्राट्यांड एस्ट्रेस्ट मूलाएम 'एन ट्रांड मह आफ्राल । प्रमाप कड़ेट्या (श्रुप एं कड़ेट्डं एट्टी-शड़्मा मुकाएम 'एन ट्रांड मह अस्ट्रिया (कड़ेट्या कड़ेट्टां सेट्याट्टं काट्डेस एएकार प्राधित्य क्रियाट हिम्मे विषयि क्रियाट हिड्डेस उ अचिन में में प्रमाण का प्रमाण हिम्में

कारमें भिक्कि कारम।

कर्माना केटा सिर्फारिनम - दममंद कर्मा कार कुरूके क्विटा सम्प्रकार कर्मान कर्मा

कारकार के स्थान के स

b made the

कार्य कार्या कार स्वास्त के स्वास कार्य कार्या कार्य कार्या कार्

- जाक्तान्ये नात्र अन्तिल वार् ?
- इंश । आध्यक् अध्यक्षेत्र हथाना । १६६ -
- येरा। अभ्यानं भ्रम्बाक्षं क्रम् अस्य अस्य अस्य
- व्यक्षंत्र भीने व्यक्षि अपूरानं वर्ष्यंत्रं अपि आक्षेत्रं क्या

अवय ग्रहतिश

-तामान उद्धे जेरू राजा।

- वार त्राव ज्यानार वायां देर देशया आयां अत्यां कार्य

उच्छा दे र

- प्रस् मुक्स कंप्रमाहित भूग-

माने अरमान क्रियम खाळाश्यम।

अन्यान क्रियम खाळाश्यम।

अन्यान क्रियम क्रियम खाळाश्यम।

अन्यान क्रियम क्रियम क्रियम व्राह्म क्रियम व्राह्म क्रियम क्रयम क्रियम क्रयम क्रियम क्रयम क्रियम क्रियम

# Space#

म्पञ्चत (अएक खिए जागर प्राञ्चाद कर्मांचे चारापाय द्याय हुर्वि सारंव प्रतास प्रयोग शिम अर्थे वार्थ विकेक्यक् जिंदिण्य क्रावेष्ट्य।

स्पिक्टक क्षेट्र कार्क क्षेत्र कार्क्ट कार्क्ट कार्क क्षेत्र क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क क्षेत्र क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क क्षेत्र क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क क्षेत्र कार्क कार्य कार्क कार्क कार्क कार्क कार्क कार्क कार्क कार्य कार्क कार्य कार्क कार्य कार्क कार्क कार्क कार्य कार्क कार्य कार्य कार कार्क कार्क कार कार्य कार कार कार्य

वारेम (प्रणंद क्रियंट्य क्रम । वारेम (प्रणंद क्रियंट्य । अवस्थि वारेक्ष अक्ष्य क्ष्यं अवस्थि वारेम् क्ष्यं क्ष्यं वारेम क्ष्यं क्ष्यं

ज्यारमात्मा उन्हाद हाराक भारत हो इस । अश्व त्यात्म ताया

वृत्तं स्प्रमासन्तित क्षेत्रस्यकंगोनमैं स्प्रति हिंदार। श्रिम्मो अन्त्रकं श्रित्त व्यक्तिकं प्रति क्षियक्षेत्रके श्रित्त प्रित्तिकं स्थिते स

रुप्तं अपने ज्याने स्थांत्र नाप्त्य। मैंड ह्या क्षांक्ष्यं मेंस् सामाप्ताना अपंत्र। पिता मेंन्यो क्रांत अपने क्षिया मास्मेंड। जान त्यानांत्रं सीत्। त्याने । पृत्यंत्रं एक्ष्यं अपनेम्प्यं श्रिम। अध्या मास्में अध्यामात्रं। क्षित्रं क्षेत्रं क्षेत्रं क्षेत्रं आवेशांत्रं । आमापंत्रं त्यानु कारमात्र क्षित्रं मध्या अवेश्में मध्या अवेश्में। अव्याने भिने क्ष्यम शूर्य । अपूर्य साटम सूरिटना द्राया। स्थित श्चिर (म्मार श्वा । हिन्ह भिन्न अप्रथ भा स्थिति हिन्दि समिने मंगे संघायाप्त प्रथित मिने (म्मार श्वा । हिन्ह भिन्न अप्रथ भा स्थिति है। स्थिति समिने मंगे संघायाप्त

क्षेट्ट खर नित्रवेदिन्यंता। क्षितालि एत द्राया त्या द्राया माक्ष्य यात्रे मन्त्रे ह्या मंद्रमाने क्ष्या क्ष्या ह्या प्रमाणालि एत द्राया प्रमाणा प्रकेश मुद्रमें प्रमाणा प्रमाणा प्रमाणा प्रकेश मिद्रमें प्रमाणा प्रम

मुक्का 3 विकासिवां तर्य अर्थन रहा यात त्यं सम्बें . यावायों अपडां ' सप्तासिवा (लाज्नां क्रां में में भंग क्षि हुए अंत्र ने सम्बें भेड़ यात क्ष्यं वृद्धं क्रिकेंक् करण प्रमासिया। मूर्नि मंच्यं व्याप्ते क्ष्यं में हि, ह्या एक्षेत्रम्य वादं व्याप्त सदाये याद्वं क्ष्यात्में हैं।

> - (त्ररा ) ज्यान चार्री हिया उपरे ५ मायं। - क्रोमाध्यं अद्भि च्यात्रांड जाक्षंड ग्रेथक्षं इत्यं एक्ष खणा रह ।

किर असाअपादार लिए (प्रत्य करंच (अवम्याप्त (म्) कामंच-मद्यं क्षेमीम् -रणिल सिर होप्रत्य कोट्य तमाय क्षेत्रियांचे स्थामंच- मद्यंचं एक्ष्य केषु डाक्षा भा व्यव्यिक्षंचं एम्म मद्यंचे एक्ष्य केषु म इमे। एक्षे क्षेत्रियांचे अद्रांचे मध्यंचे स्था क क्षेत्रियांचे भामे क्षेत्रहांचुरांचे अतं अक्षेत्रांचं क्षितंच हेर्चेय हिंग अधिक कार्य कार्य कार्य के कार्य कार्य कार्य के किया महादार अ

बरवाम हार अरत्या प्राप्त प्राप्त प्राप्त का प्राप्त वार्त माहत माहत माहत वार्त का प्राप्त वार्त माहत प्राप्त का प्राप्त

1924 राष्ट्रिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक

- अ - अरे मुलाड़ ! ब्रह्महात कद स्मित करात है रहते का

Talay 2005.1

प्राप्ति (प्रांव क्रांव क्रांव क्रांव हार्य हार्य क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव रहाव क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव हार्य हार्य हार्य क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव क्रांव हार्य हांव रहा क्रांव हिम्पडड अंगल्य था। ठावें । कृष्ण अपादम क्षिमक्ष्म क्षिणं का क्षिणं चाराल्य या। गर्कान्यें काण प्रकारम् एप आरातं सम्द्रय पूप्तं प्रेश्म एप्पं प्राप्तं प्राप्तं प्राप्तं क्षिणं वार्षं प्राप्तं क्षिणं क्षि

हिछए द्राज्य विस् ? भिन्ने साप्तर एनन सिन द्रांच अध्योदन केर्यात्म प्रस्थान प्रकारम प्रकारम प्रकारम प्रकारम प्रकारम प्रकारम हिंद्य १९०१ भाषा विद्यंत अवं श्री मित्रात्म प्रस्थान स्थापन हिंद्य भाषा कार्यक्षण है

सिर्मिंगं स्पृत्ति । प्रत्यं प्रेस्त (क्षित्र 200ं कार्रामा) एत्या कार्युत्ताम् वे क्षेत्रे स्थित्यां इस्त-मा बेर्स्ट्रिंगं आदि अध्यक प्रायंत केरता। अर्थेशं तथं द्वाल एप्यांचं क्ष्यं - (प्रताल्य ) कार्या। प्राप्ते सार्वे प्रेप्त (क्षूर्व (द्वाल) सार्वेशं गाण प्रतालकां कार्या। एप् आववं नामाः प्रदे अर्थेश्य ल्यां इस्मे अध्याच्यं इस्ते अध्यां वे प्रताल कार्याः। भेत्र दुत्रवं क्ष्यां भि नामाय इसं अध्यां वेरियं स्थित कार्याः। -आसां इस्पिय ल्यांक्ष्य अस्ति।

एतं व्हें अद्भ माद्र अन्ति माद्र अन्ति। होरंग एत अवास

3

21

35

[8]

माने अपम एत्यहे त्याम । माने अपम एत्यहे दिल अपूर्व प्राप्ति माना अपूर्व प्रमाणमा । क्रियं व स्मार्क मिने अप्रिक्त अप्रिक्त । अप्रिल स्थापण माने अप्रत्व (स्थापणमा ) क्रियं व स्मार्क मिने अप्रिक्त अप्रिक्त । अप्रिल स्थापण माने अप्रत्व (स्थापणमा ) क्रियं व स्मार्क मिने अप्रिक्त अप्रिक्त अप्रिक्त माने अप्रत्य अप्रत्

प्रेंच डांग्रिय ब्रुडं टेक्टेट्रुवालं ज्याबंद ज्येशं। १ जारम लिए म्पर्राप्त १ पेट्र्यापेड़ खा वारंग्यां च्यामवं क्यामवं तरं पाद रहें क्रंट में त्रिया म्पर्याप्त । स्पितं प्रयापेड़ खा व्याम्पर्याचं क्याम्पर्याच्या म्पर्याद्वे स्थितियां म्पर्याप्त । स्पितं प्रयापंत्र में स्थापंत्र क्याम व्याप्त में स्थापंत्र स्थितियं दें दुर्ध्यात ज्याप्त स्थापंत्र स्थापंत्र स्थापंत्र क्यामां व्याप्तंत्र स्थापंत्र स्

अपन्त स्थ वांग्रह क्ष्य वांग्रह । अपने क्ष्यक इस्त वांग्रहरूव।

क्ष्म भंग । प्राचां आराक्याप्ट का विराण कार्य कार्य क्षिम । क्ष्म आंक्ष क्ष्यं प्रमा विवास कार्य कार् क्षिम 'अर्थम अपहिक्के रीत टाला उटके हुए प्रास्टिया। क्षिम क्षिम क्षिम क्षिम क्षिम कार्य क्षिम कार्य क्षिम कार्य क्षिम कार्य केल इस्सिया । तार्वक्षियं क्षित कुनं क्षिम जाने कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य आर्था क्षिम कार्य प्रथा वार्य प्रथा क्षिम कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य क्षिम अभ्या । तार्वका आपंत प्रथा कार्य क्षिम कार्य क्षिम कार्य हार्य कार्य कार्य प्रथा अपंत अपंत कार्य क

क्याद्र क्षि इक्षिताट (प्रणं। अन्तर साण्यं भर् प्रिय (शक्ष्यं २००० सर' उत्साहके) सार्खे श्रम ब्राउं प्रात्मा क्षित्यं उत्साद क्ष्मित्यं उत्साद प्रात्मित्यं अक्ष्यं स्था क्ष्मित्यं साद्ये अप्रयं अतंत (अर्ज ब्रिय क्षित्य इक्ष्मि उप्ताद्यं । श्राव्यात्मित्यं सर्था व्याप्ति । सार्व्याः क्ष्मि क्षायं अतंत (अर्ज ब्रिय क्ष्मित्यं इक्ष्मि व्याप्ति । श्राव्यात्मितं सर्थां व्याप्ति । सार्व्याः क्ष्मि क्षायं अतंत्र (अर्ज ब्रियाः व्याप्ते क्ष्मित्यः व्याप्ते क्ष्मित्यः । सार्व्याः क्ष्मि क्षायं अतंत्र (अर्ज व्याप्ते । क्षायं क्ष्मित्यः व्याप्ते क्ष्मित्यः । सार्व्याः व्याप्ते अर्थः । सार्व्याः क्ष्मि क्षायं अर्थः (अर्ज क्ष्मित्यः क्ष्मित्यः व्याप्ते । विव्यव्यात्मितं क्ष्मितं । सार्व्याः । सार्व्याः व्याप्ते क्ष्मितं । सार्व्याः व्याप्ते क्ष्मितं । सार्व्याः व्याप्ते क्ष्मितं । सार्व्याः व्याप्ते क्ष्मितं व्याप्ते व्याप्ते क्ष्मितं । सार्व्याः व्याप्ते क्ष्मितं व्याप्ते क्ष्मितं व्याप्ते क्ष्मितं व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते क्ष्मित्यः व्याप्ते क्ष्मितं व्याप्ते क्ष्मितं व्याप्ते क्ष्मितं व्यापते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते क्ष्मितं व्यापते क्ष्मितं व्यापते क्ष्मितं व्यापते व स्प्रका (प्रध्न किल्ला क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक

काराह करिय सर्वे अखेकार स्थिते कर्णाः कर्णी। राष्ट्रेत क्वारांता भटा : सर्वे सम्म मिना कर्णि सर्वे कर्णाः, नक्ष्यं निक्क नक्ष्यं निक्य स्थाने क्वार्ट सर्वे, कर्णाः,

टियु अनेटियंद्वं क्रम 'अस्थिको म्लीकाम्येन, स्थित व्यक्ताह्य केक्ये। करियुं स्मितवाद्वं क्रम अविकास अविकास स्थाप कार्यात्वं क्यो अनेटिवंत् उत्वरण्य। क्योग्नाहिष्य क्षय्या केष्यात्व प्रतिक्ष्यम्। क्योग्नाह प्राप्ताः क्रिया द्वाह्यं अव्यक्ति क्ष्यं क्ष्यं

करम ता त्राची उपाक ' प्रत्या विक्वित हमाड व्याह्मण महत्त्र, महत्त्र व्याह्मण व्याहमण व्

विकास से के के किए होगाय सहसे मुक्त होगा।

स्वित्र काम प्राप्त काचु ए विक्टं क्रिट्र मिट्र में क्रि विक्टं क्रिट्र में क्रिक्र मांचे क्रिक्र में क्रिक्र काचित्र काचु क्रिक्र में क्रिक्र काचित्र क्रिक्र काचित्र क्रिक्र में क्रिक्र क्रिक्र काचित्र क्रिक्र में क्रिक्

# भिक्क # साथ क्षिया । महर्षे थिए। हिएम काड़ अप डलंगि। साथ स्प्रमा। दुर्मे तेयम अने अभ्याप ध्रेम स्पेम संस्क संस्क द्राया आड़े होताह अद्येप क्ष्टिंग्रिया एक एवं। जाड़ आप्याप स्था आस्मा क्षिय एक एक एक प्रिया आड़े आप्याप साम । देखि अप्याप साथ आस्मा एक स्था हिम्मा काड़े आप्याप साम । देखि अप्याप साथ आस्मा एक स्था हिम्मा काड़े आप्याप काड़े । देखि अप्याप काड़े अप्याप साथ अप्याप काड़े क्षिय स्था हिम्मा साथ स्था । हिम्मा अप्याप स्था अप्याप स्याप स्था अप्याप स्था अप्य स्था अप्याप स्था अप्याप स्था अप्याप स्था अप्याप स्था अप्याप स्य

नम्यात क्रिक्टरं उत्प रेकी स्था।

भिन्य क्रांक्टिश्या। क्षांचे ठेडु त्रेप्रभक्तपुर क्रांक्टिश्याचे क्रांक्ट्रियाचे क्रांक्ट्रि

भंग हिंद्य अंख्य अर्थिक्य ॥ क्यू क्रूप्रेस स्मारंग अपने क्यकेट सुराट अर्थेड़ भंदा – स्पडाप अर्थे सामुच्हां क्या द्रिक्यंट्य क्रेंग्यंच्य क्रेंग्यंच्य क्या क्या है दिन कार्य साम साम्य अरम्पे अर्थेने पण – क्ष्या प्रच अर्थे प्रदेश रखा। क्षिस पास्तर द्र्यें साम साम्ये अरम्पे भंदिने पण – क्ष्या प्रच अर्थे प्रदेश स्वाप्त द्र्येंच्ये अधीम्बानं व्या माराक्रमारः।

अधीम्बानं ब्रह्मां प्रमेन क्यूरिमेरियम मार्थितं प्राचानं क्रियमं मार्थितं स्वीम्बानं व्यापानं न क्रियमं स्वाप्तिम प्राचेत्वं व्याप्तिम व

क्रास्ट्री उपमं कारण व्यविद्यं युवलं प्रक्षां ह्यां ह्यां स्यापा। वारंगावं त्यां क्रांस्क्रियं पुटा प्रथि ख्राप्या ज्यारमाण्यं क्रांस्क्रियं एप्टा प्रथि ख्राप्या ज्यारमाण्यं ह्यां क्रांप्यं विद्यां त्यां क्रांप्यं व्यव्याम् व्याप्यं क्रांप्यं क्रंप्यं क्रांप्यं क्र

- दिलासुकी अदम्या ' सामेशुंच हायु हास्याद्य (प्राप्त्र डिमेंचूप्ट्ने माडे श्रिक्शियों ' प्राप्त ' प्राप्ति ' हिमेंचूप्ट्रे स्वकं प्राप्ति (कुंड प्राप्त्य) वेशियों भाति। १ स्प्रिट् में हुए प्राप्ति अस्प्ति प्राप्ति कंट्रेस्ट में मेंचित ' हिमेंचे प्रम् प्राप्ति । कांच्यिम १ प्राप्ति कंट्रेस्ट विकास क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र के क्षेत्र क्षेत्र

रक्षा अस्त देश्युवे अस्त रक्षा द्वार र । भरम

सिरंग प्रिकार के अपना - क्रा 'मुखा का भागप साहिक अरंगप्ट ।

## -की मात्र प्रेंत ?

करम करिश्री इं एक्टब हमाज दुमिरिंग। वार्किए एम् उद्देश । भगाप (शुर करियों भेपिरिंग दिन्देश क्या-विमास मस्याप प्राप्टे क्या। जक्या भगाप (शुर करियों भेपिरिंग दिन्देश क्या-विमास मस्याप प्राप्टे क्या। जक्या - अग्री दिरिक्तर-त। जन्म पात्र पात्र हिंग पर्देश प्रस्ति क्या। जक्या - अग्री दिरिक्तर-त। जन्म पात्र पात्र हिंग पर्देश के प्रस्ति क्या। जक्या

-मापू, ज्यामी मंदन लायका?

एक अरिट् केसा असे तथा। भरोती क्षेत्र श्रिय। आसार जिल्ला प्रतिस्थित। एत स्थ क्षिय। असंसमं मे (अस्मेन अव्यट्ग: बाहे - क्री' याषक अर्थ हाथ आयांड आप प्रतिन। भर्ष आप श्री

। विक स्ट्र टरि कारण। याथ व्यास प्राप्त में

अप्रयुग्त । २७०४ मध्यकं ६९५ र्स्पाई यूरं सेंग्रेर कं। उद्योगेनं उप्त १६ जन्द व्यक्षत्र क्षित्र क्षित्र व्यक्तियम्बर्धे युविन यापः निर्माणिते वृद्यः एगावं सेंगण - हम्मा ज्ञारक (प्रमाव) एगाव। हगर एगाव व्यवस्था यार्चे इस्।

# space #

स्मा दिस्स कार्यातमे (एकमा । एक कि १९९५) उद्योगने के में मणायं वार्ये के मणायं वार्ये के में मणायं वार्ये के मण्ये के मण्ये

## ८ जात्रस्य अस्त

मेमानेलाप प्रकार में क्षेत्र क्षेत्रका स्था स्थान स्थान में स्थान स्थान में स्थान स्थान में स्थान स्य

मारिकार हाथा जारा के प्राप्त कार के कार्य कार्य कारात हिंदी ।

कार्य कर्म कार्य कार कार्य कार कार्य क

भिक्ति दिश्य।

अभ अर्थे ब्रांग - कार्मेश्वर ३ क्यांगित्र भेग्यं ' टेंड् बंक्यांचं क्रिका एप नेड्रुकां अभ अर्थे क्रिकां ने क्रिकां क्रिकां क्रिकां क्रिकां ने क्रिकां क्रिकां ने क्रिकां ने

मियल सारां उत्ता ट्रांस बुंचं सार मैस्पिट तां हुन्। मियल सारांट्र या उद्धं ' दिल्हे क्रिक्सं क्रिक्ट कावंत न्यां सारांट्र या गारांट्र या, अवस्ट्र । तूवं अल्पातं सेशा लाकं सम्प्राट्य केष्ट्र । तुत् शकेकाहि अवस्ट्र । तूवं अल्पातं सेशा लाकं सम्प्राट्य केष्ट्र । तुत् शकेकाहि माम सिव्यातां कामा कामा कामा अवस्त्र के प्रकार स्था सामा प्राप्त क्रिका भितांट्र । माम सिव्यातां कामा क्रिक्ट कामा क्रिक्ट के प्रकार क्रिक्ट के प्रकार के अवस्त्र के अवस्त्र का क्रिक्ट के अवस्त्र क्रिक्ट के अवस्त्र के अवस्त्र क्रिक्ट क्रिक्ट के अवस्त्र क्रिक्ट के अवस्त क्रिक्ट के अवस्त्र क्रिक क्रिक्ट के अवस्त क्रिक्ट के अवस्त्र क्रिक्ट के अवस्त्र क्रिक्ट के अवस्त्र क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक्ट के अवस्त्र क्रिक क्रिक्ट के अवस्त्र क्रिक क्र क्रिक क्र

सार्का है। हिंद वार्य उन्हों होता है। हिंदी हिंदी हैं

Y. 252-6-

मार्थ हैराउं हराइं हराम हिमा

भितान क्षिया है। स्थाप होता व्याप होता है। विकास क्षिया क्ष्या क

 विगर सामाय अविमा वितिवाद सिक्समा काद्य , जाममान

शिवतार जिल्ही? - ये प्रमुख्य व्यक्षाणं खामा। ये अध्ययं चर्ते छतंत्री खात स्मर्केष व्याखिक। किन्दे अत्वर्धर जैताय लाउं अद्धर कार्य तालावार । एकार्य अव्याखं क्या काम्मदरे . देवयुक्त ।

- WING 1

- ग्रें। भारता हरणा अपना क्रांस । मार्था मार्था ।

- या। काभूरा प्रतिय ज्ञाडाक । ज्ञाडाकं अप अपनेश हिस्कं ज्ञां ।

भेड़ २९१४ भाषाडु अर्जां पृथ्व प्रिट क्यारंत एक स्थितिय। के अर्वे उत्पायकां क्राहित को क्षेत्रशाम महाह । भे महाह हिम स्मिरक सुमुक्ता। रेड़ अंधिक अव्यक्ता राष्ट्रम एड्क्ट कार्यक्रक युक्तिय — स्विय देशव, ये राधि जाणकारा। भेत्र मुख्यादात्र क्लिंड स्परंत्र प्रास्त द्रास्त्र ३ उपकारित सांके सिया का कार् यकुरंदां क्रायान्। एत काराष्ट्र कारणवं अस्ट्रिक क्रम एकारिय क्रिये मिल माउं एपत्रमे त्येत्र हिमा कार्यका अक्ष्य में माउं कार्यम् हैम माउं मारं । यहवात एम मात्र ए अस्मितं पत्रिंग द्वाया द्वाम क्या में मात्ता में मध्यों शिया अवंत्रामं अवंशियतं मध्र प्रत्यात् ने मह अवाह आध्यात्य अंग्रहिया काध्यारपाडं प्राध्न एक एक प्रिकार है अप्रयां उपाया के अप्रयां प्राथम काव्या मार्थेय करण्यु कार्यात्र क्रमिक क्रायं, हमय मार्थ्य ह्राया क्र्या हम्मिल नार्थाय मात्र प्रसाई वार ।

# space #

अर्थावं इत्हाप सबक्यां अवेगुत्रं ब्रहेव। त्मित्रं हात्र प्रणा २००७ माष्ट्रा।

प्रयं अपर्य करंड भेड़ारक क्रांसिंग कर्डेस 2001 प्रयात केट्या — आस्प्रारंत्र प्रारं क्रांसिंग व्याप्त क्रांसिंग वेद्र न्याप्त क्रांसिंग वेद्र व्याप्त क्रांसिंग वेद्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त क्रांसिंग वेद्र व्याप्त व्याप्त

ग्राल्म कल श्राय।

वारंगा मेंकास प्रमां क्यांता प्रक्रिंग प्रथम अभिया क्येंकि । अप

वार्षित इंदिरंप्ट्य पीत्र कांगे जाउ जेक अड्डाई। यार्ष्ण्यां सुमें एक्प्रां एक्प्रां जाउ जेक अड्डाई। यार्ष्ण्यां अप्रांच्छं अज्ञाप्ट्य क्ष्यां क्ष्रिके कार्वे। विप्ता क्ष्यां क्ष्यं क्ष्यं

अगरे अतरे १ वर्षे ब्रस्कान आरंभस स्मा

अल एकार उसे स्टिश्च क्या अर्थन्य । उसे कार क्रिश्च क्या क्या क्या स्टिश्च न कार्या क्या स्टिश्च में विष्ण क्या स्टिश्च क्

क्षाकार्य हम स्ट अवंड र

अस्ति क्षेत्र । बिक्क्युन् बाद्मी क्ष्क्रिय का जामाने जाए। वित्र प्रक्षिया, मस्मिष्य देव क्षेत्रिया, वेश्वि वर्गेक्ट वेस्प्रिया वित्र प्रक्षिया, मस्मिष्य देव क्षेत्रिया, वेश्वि वर्गेक्ट वेस्प्रिया यखी क्षेत्रव होड्डाक इडमा: प्रमाण प्राप्ता। प्रव्यापु रेक कास्ये (महा प्रमाण्ये कर्षणा। वैमेण इक्ष्मण्ये

'असि अमें कारे आहेत महिन्द को, करत अक्षार निर्दाह वितित्र ग्राम अन्ता।' भारते भारते शासन अरहे अपना क्रीसिन्ह को: 'बाद वाटर आसन वितिहि प्रितिम एँटिसा।'

भित्र क्रिप्रुक्ष्यी: ब्रोह्म (जाइक (क्ट्रिट्स कुछ अक्षेत्र एटा . प्रति कटंड क्रिएट (जाट्या विवक्ष्यानंत्रंत् क्षित-स्टिंग त्रीक त्रिक्ष अन्य कर्नेत्र केप्य-स्टिंग त्रीक्ष क्षेत्र अक्षेत्र प्रति क्षेत्र क्षेत्र

कार्रामा, अर्थेत कार्याचे कार्याचे कार्याचे कार्याचे हम्प्राचे हम्प्रचे हम्प्रच

कार देखा प्रकार कार अल्ड आया उत्तर उलाका कार्य स्टि स्थान वित्र-किरि अल्ड खेला हिल्लिय हिए हैरिया स्मा प्राप्त शक्ति स्टि स्थान वित्र- स्थारते रेपा व्रक्त लाख होता। विभाव प्याक्षेत्र क्यालाट्य भडम एव उत्ते उत्ते क्षेत्र केष्य केष्य हेन्छ। विभाव प्रयाक्षेत्र क्षित्र क्षेत्र प्रयाद्य भड़म एवं प्रविद्य क्षेत्र केष्य प्रविद्या

ल तर्रीका अस्व वेद्यान सिट्ट उटा। अन्याद्यं सार्य) ता जन्माक (मुट्ट कार्टि भारियाद्यं मान्द्रां कार्या मंद्र अप्येच सार्या — यह स्रिक्यार स्रिमणार सार्यामीयामार स्थांत्र मान्याद,— लांक्यमीए भेद्र स्थि अदे अस्य सार्व्य कार्यामार स्थांत्र मान्यां सार्या स्थांत्र मान्यां सिंधि त्यां अप्रेमा श्रिम कार्यामा द्यांत्र मान्यां सार्या त्यांत्र भार्या प्राप्त मान्यां। भाराप्तं भेद्र अप्रेम ताव्य क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां स्थां

मास्मारं प्राप्तिकं हिए। उपस्यामं क्यार्यको पृत्र अप्येतं क्षेत्रमा इ प्राप्तिम। पृत्र अप्यायके व्यक्तिकं अक्षिप्रक्ष अभे अविदेशं स्थिप – ब्याहिं व्यक्तिकं उत्या व्यक्ति प्राप्तिकं पत्र धारावेदाव एष्ट त्यामा केवार व्यवस्थित व्यव प्रदावं व्याप

आखादां सामां है अप अमायक उटां सिएए सिएम वस्तां जाका होड़ा. आरक अद्यां उटां आहें द्वां स्मित्या धारावेदां भेड़ पत्रें आएए । आहें एक उटां भा इतं। दुष्ट स्वार्थियात । आपात्मामा भंत्रास्त्र भेड कड़ेल इत्वार्थिया धार्ष्यं अप्तां अपतां अप्तां अपतां अपतां अप्तां अप्तां अप्तां अप्तां अपतां अपतां अपतां अपतां अपतां अपतां अपतां अपतां अपतं कर रडेम दिस्स् । इहि भिरापा: कर्षिता एता अधिनं अधि त्याद प्रिया विश्वतात्र इशन् विश्व क्षेत्रेष्

> यार्थांचे दम ' द्राक्षांचे द्रम्य भ्राक्षांचे द्राचे श्रह्म श्रिमे द्रम्य (क्राक्षांचे क्रामें भ्राचे वार्थे ' श्रह्मांचे क्रम्य व्याद्र्यांचे व्याप्ति, श्रह्मांचे दम

अस्मिनं अप ' अस्मिनं क्या प्रिच इंद्रक' प्रिचेट्ट ' प्रिचेट्ट क्या ।

अन्यापितं त्राप्तं अन्य वर्ष्ट्र क्ष्यं (उ ब्हास्य । अन्यापितं साम्ये अस्मितं स्प

उत्त स्था। है, व्यस्त इंडा स्था – इंडा अरबेश्य उत्तर्यतां द्वाराणं है, च्या जाण्यामा उत्त अरंक्ति। एक तार आक्रश्यां श्वरणं स्वारणं ज्ञारमे उल्लेखा। केल चारणा केल्यु संस्थानिक्ति अत्यस्य बच्चरणा त्ये प्रमावण में: मत्या । अर्चरणं अरबेश्यां त्याद्वित्यं भिष्यां त्यादः वादंत्र अर्चेष्यं अर्द्र- विकास किस्प्र । द्वारणं । त्याद्वां

लावांश अमृद ब्याल्य। अखाण टिन्स्याप्त श्रमांते दूप अला थिंग वाण्यः कां। एष्ट्र युक्ति द्रेयवांत ब्याया श्राप्ति प्रमाणं यात्रा कांग्-व्या वेद्युव्ये यात्रा व्याप्त कांग्न-व्या व्याप्त श्रित त्रांत्या। अख्याण भेग कुष्यं भाम् भाम्न त्याप क्रिया त्रांत्याच्यं व्याप्त विश्वंतं कादं भावा प्रकारण भेग् कुष्यं भाम् भाम्न त्याप क्रिया त्रांत्याच्यं व्याप्त विश्वंतं कादं भावा परंदा । वाद्यंत्र प्रिय आखाण प्रमाणं विश्वंत्यं । त्या विश्वाद्यं

याङ्गिलं कृष्टी याङ्गिलं द्या. पाद्य क्रेट्टर, प्रस्त क्रेट्टर, प्रस्त क्रेट्टर, प्रस्त क्रेट्टर, प्रस्त क्रेट्टर, प्रस्त क्रेट्टर, प्रस्त क्रेटर, प्रस्तिलं क्रेटर, क्रेटर, प्रस्तिलं क्रेटर,

टिए मार्थ हो क्रियाट सियतं मेडी मी बाट द्वि महारी मार्थ हिया। एक्सिं डाम्परं दिनं क्रियतं अडी मी बाट द्वि महारी मार्थ हिया। अडी इहिंद्य अडी क्विं महारी मार्थ हिया। कर कार हार है के के के हिए हार है। का निर्म हार

CASE CHELL SER BELLAND

क्रिमें स्थाना अक द्रांतृति उटनं विद्यां क्ष्य मिलानं अप्री प्राप्त विकास क्ष्य क्ष्य व्याप्त व्याप्त

अपुष्टिम अद्धारां अविश्वमं क्या ।

प्रमायमा अप्राप्ति अस् वास्त्र अस्ता आम्प्राप्तां स्ता अप्रमायमा अस्त द्वावा अप्र ।

प्रमायमा अस्तु अस् वास्त्र - मास्त्राप्तां न्या अप्रमायमा वास्त्र क्या अप्रमायमा क्रिय भारताः ।

प्रमाय क्षा वाद्व क्रिया क्षा वाद्व अस्ता अप्रमाय अस्तु अस्ता क्षा । प्रमाय अव्या अस्तु क्षा अस्तु क्षा अस्तु विश्वमं अस्तु । प्रमा अस्तु विश्वमं अस्तु अस

- े ज्याणित हाकड़ि कुछ फिल्हर त्या ?
- अक्षां आसर एम्ड अक्षां क्षेत्र क्षेत्र
- क्षित्र अभिन्य अभिन्य क्ष्यां क्षयं क्ष्यां क्ष्यां क्षयं क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्षयं क्षयं
  - म, आसारक (भरवरे रव।
- मरंग अद्भारत्ते सिंह एए ' कुल्ह अपड दृष्ट्यत स्टाटर था। - अत्राप द्विस्टारं को दिह एका मा। अस्यार मृत्यार दि में या
  - आहि माराव थर्डी दिन स्टब्हि।

अविकास मिन्द्राम कार्यक्रिक अपने क्रिया होते अपनी अविकार अपनी

वाम्नीस्म अन्तान वारावं अपनामं इस्त प्रयो । सन्तान १ व्या १ व्या अपनामः

राल्ये प्रियं।

राल्ये प्रियं।

राल्ये प्रियं।

राल्ये प्रियं।

राल्ये प्रियं।

राल्ये प्रियं कार्या कार्य

मिर्कार कार्य कार्य के कार्य करण क्राया करणा कार्य कर्ण कार्य कार

साख्यमध्य इटा एटल ट्राइ एम अटल साख्यमं कुए कुछा मा उटा । भेष्टिकेष्ट कुम्ममं उपट्रेसिय एन' मा मार्य मायाम्य कुछा कुछा मे प्रांत माया मार्य मार्य । ब्रोत्य प्रिकेष्ट कुम्ममं मार्य किया कुष्टिक एमा स्थाप कुष्टिक प्रांत प्रांत कुष्टिक स्थाप । प्रवेशाल प्रमारित । याद मीयाद्वंद दक्षिण भेगाप युक्त मार्य मार्य प्रांत मार्थ मार्थ मार्थ कुष्टिक मार्थ किया मार्थ क्षित मार्थ क्षित मार्थ किया मार्थ किया मार्थ किया मार्थ किया मार्थ किया मार्थ किया मार्थ क्षित मार्थ क्षित मार्थ क्षित मार्थ क्षेत्र मार्थ क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्

वास्प्रस्य लेकिएव ज्यं छैपछ। बान् डर्फिएम। वैश्वाल ब्रिटिएम ' कर्युमाएम ३३ - जीसार्थ मश्य ग्राष्ट्र रुक्सर्व रैस्पर्ठ-३ उत्वं सिरंग स्प्राणपांच अतं अभ्याप्य सिर्म क्रम्म। राम्प्र प्रमांच क्रम्युम्पर्ट रुखं सिरंग क्रम्याप्य अत्याप्य अतं अप्राण्य प्रमा क्रम्म। राम्प्र प्रमांच अप्रचे अप्रचे अप्राप्तं राम्प्राप्त क्रिएपचं अवेशमं क्रम्यं प्रमांच प्राप्त क्रम्म। प्रमांच क्रम्यं क्रम्यं अप्रमांच अप्रचे क्रम्यं अप्रचे क्रम्यं अप्रचे क्रम्यं अप्रचे क्रम्यं स्थानं क्रम्यं क्रम्यं अप्रचे क्रम्यं क्र

अरोक्ता अर क्रिक प्राहक क्षेत्र क्रिक क्षेत्र क्रिक विक्रा । अरोक्षा क्षेत्र क्षेत्र

खिल्नं स्थिनं क्रिस्ट्रिंग क्र

क्रियरा एकावं काश्वित्वाक (छान् भेत्रवात वर्मा त्राट्यंतः) मिल्यं अत्याप्त कार्येत वर्मायं व्याप्त मिल्यं एट्रे आद्र । स्वीक स्वयुक्त स्वाप्तवः काश्वीन स्विकावं कार्य्य (छात्त्वं भिर्मा भेषातं न्याप्त्रं । स्वीक स्वयुक्त स्वाप्तवः क्षेत्रम् स्वाप्ति स्वाप्ति स्वयुक्त स्वाप्ति स्वयं स्वयुक्त स्वाप्तवं स्वयं स्वयंत्र स्वयं स्वयंत्रं स्वयंत्रं स्वयं स्वयंत्रं स्वयं स्वयंत्रं स्वयंत्

(प्राचित्राक्ष अक ट्राम्याक्षित्र प्रमान कर्म क्रिया क्ष्रिया कर्म क्ष्रिया कर्म क्ष्रिया कर्म क्ष्रिया क्ष्रिय क्ष्रिय

अध्या अद्या (क्यांट्रा) क्रियं अप्ताल क्षेत्र क्षेत्र

विष्म स्मारकार, अपने सेंगु सिंग राणा अन्या, के मिरामनेंग, सम्मारका क्षियं एए सिंद्रा एएएटं अपम ज्या अपाय । द्वांचे के सिंग द्वांग अपाय अपूरां प्रेषा अप्यास्मारकारं,!) अ०२-४५ वड़ आयात्र के अपूर्यं कास्मारका अपूर्यं उपमाण अपुरिक्त प्रांत अनुवाद अञ्चले सिंग प्रेंग के कुण्येश । स्वर्ध्यात क्ष्मारकार वृद्ध्ये अपूर्या कार्या अपूर्यका प्रवं । कार्या अस्मारका कार्या अस्मार्यं कार्या अस्मार्यं कार्या अस्मार्यं कार्या अस्मार्यं कार्यं के स्था अप्यास्त कार्यं के स्था अप्यास क्ष्मां आप्यास अस्मार्यं कार्यं के स्था अस्मार्यं कार्यं के स्था अस्मार्यं कार्यं के स्था अस्मार्यं कार्यं के स्था अस्मार्यं कार्यं कार्य

जाअस विश्वरंत रामी। जाउं हुए साक्तंत्व, वृक्ष्ण द्या क्रिश्म उत्याद व्यो मायु। भाषां व्याप्त व्याप्त

अपितंतु उच्छा। उत्पर्भावकेस्, वेषं उत्ता कार्य आर्था उपर भगर आर्था स्पर्धाय अर्ग्यं श्रांता

विक्रभाम आत्रामात हिएं। विस्मादं उत्तर, व्याप्त न्याप्त, विक्रमें अवस्थान क्राप्त क्राप्त हिएं। विस्मादं उत्तर क्राप्त क्राप्

येएआउ क्रा, अवंशां प्रमुं अर्थां प्रमुं अर्थां होते स्थिता ।

तिकारं साहिकरं व्यक्त - व्रिक्ती-साम्य न स्माइम्ड जाव्य टाप्चं देव नार्याद्वा स्थितां स्थितां स्थितां स्थितां क्रा क्ष्यं नार्या क्ष्यं स्थितां स्थितां

2462 दिलान्ते द्याह स्ट्रिया त्यावराज्य । एके पढ़ हाए द्वार

कथा। अव्यक्ति क्यांक हिराक रिलाटिंग भेड़ म्हलाक क्ष्यांक कर्षात्व व्यक्तांक नाथ गारील असं पूर्ण विपार असंपार्क्षेत्र एमाप्यमाये टालाइ एवं असुन क्षिराक क्षिप्र । स्विष्टी विरायकं मध्द त्या क्षियकं क्षार्काय हिंग। यहंत्राकं ध्यसम्बा सक्षेत्रक प्रियम १४८३ अदं पुर्ण रेसिटिया वियत बुरं प्रशेषण प्रसिधं इसरे एक एक एक स्थि उपध्य ; हार कथ्या कर हूं हुं है क्षेत्र कर् अर्थां जामकां अपस अर्थां पाट उक्ती अस्थे गारम ।। हिंदे मुर्स अवित्य भिक्त अधिकारिया अंत्र माने क्रिय के अप हिंगा तथ कार अहि-स्था ३ व्ये स्थ्य हा स्थल अरड अरड अर्थ हे लेगी। प्रवृत्तामा, (अंतरिया) कारं रेक्टिं अवन्तरां एटां त्या प्रका तथा। १८४४ - ज्याप राखं ३० छक मण्डा में मेरेंडे मेर्स स्पूर्ण स्पूर्ण स्थान हार ह स्पूर्ण क्रिक मूर्स मार्था मार्थान क्रायम यह में क्रिक्स क्रिक्स वार ३० दिस्ता में मिन है। मेरे में मार्टिय क्राय अविकार नात्र द्वा मार्टिक्टिए अंदित्री अन्ति कामी एकिका। लिंबेड १७०० प्रत्येक प्रतिक प्रतिक प्रतिक क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र जिल्ला न्यं, क्रा क्रा क्रीनाचीर उपल्कामीन मात्री ज्वर नाक्षा । वर सादीना अवन रूरेट रेड काम न उरमाय अर्डिके रूपं, - लगर अर्पारं मध्ये वाध्यात रेट्य पर्डेर नेयां एक कार्य ने उस कर के उसे उसे अस्मादीय उ अक्षित्वर्य। एएएर माहि, अयर महि, हिर्दिन महि- १३ जि व्यान मारिक द्यां त्यात कुड्य टवंप मार्थात् । भीला जारक फिला १रे स्मित्र अस्त्रा

अनी स्थापता — अव्युक्ति विस्तार क्षिता अन्यस्थापता — कार्यक्षेत्र मुख्यास ।

· Elie Egue eiter e roly - motion - montense

तात्म अमार हेत्या स्था कामार कामार हिंग , दिन कामार सामार अमार कामार सामार कामार का

l'inéant tre mont est écones sés ieux

# orage #

। कार्य मार्थित क्रियम् क्रियम अव्यक्त

कार कार क्रास्तिक का जान क्राह्म स्तास क्षित कर कराई कार क्राह्म क्राह्म कार क्राह्म कार क्राह्म क्राह्म क्राह्म क्राह्म कार क्राह्म क्राह्म

अक्षा श्रुष्ट आखेर। आपत्र खाउं भण्ट कानुम एएं जब एम् करंड क्षेत्रक्षं उदमान्य चार्ष्यं वेर्न ब्यान्टिं कान्यं। भ्रेत्र काम्युक्ं क्षिय वृदं क्ष्य्या- क्ष्म्य क विक्रम काम्पुर्ट क्षण्य भावा अपने कार्यं क्षेत्र प्राप्त विक्रम क्ष्यं क्ष्यं कार्यं हिस्म क्षेत्री क्षयं भावा प्रमेर कार्यं लांचे मान्य कार्य व्रंप्त्यं कार्यं कार्य

>2091 25 CAI

हाप शिरांकी ब्रामक क्रिंग महंग्रम, आमडांड क्रोम्हता, मांड हमिंड प्राह्मा क्रिंग महंग्रमा: विक्रमा क्रं मेहडाम महान्ता महेलडं सुन शिरांच उत्तं घटमड़ क्रामण हम्मा स्थित खिर पुर्माण प्रका खेरा महेलडं सुन महंग्रमां अपरंत्र हिस खिरांच के महाने के के मांच का बाक परं खेरा कुरांगा क्राम् शिरांग अपरंत्र। तिम खिरांच का महाने दूर्ज का का करांचा के मांचा का साम खाल मांचा के मांचा मांचा का मांचा मांचा का मांचा का मां

कार्ड अथर क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक का अपना का मान्य क्षेत्रक का अपना का अपना का अपना का अपना का अपना का अपना

विकंटण। क्षीक्षकं इक्कांटं कांचे ट्राटक क्याह्य मेरि एक्कों कं। क्षेत्रमीरं हुन आप क्षेत्रादां जा क्षिक्ष क्ष्या क्ष्मा माने व्यक्तिकं कार्य शित्र क्ष्ये अप क्षित्र जा क्षिक्ष क्ष्ये क्षेत्रके क्षेत्रके क्ष्ये क्षेत्रके क्षित्रके क्ष्ये क्षेत्रके क्षेत्रके क्षेत्रके क्षेत्रके क्षेत्रके क्ष्ये क्षेत्रके क्षेत

कथा।,

अपने अपने संप्रानं क्ये में मंत्र एक्स मच्छे मार्थ विष्य मंत्र में मार्थ स्थाप में स्थाप क्षेत्र में मार्थ स्थाप स्याप स्थाप स्थाप

 व्याप्त क्षित्रक पात मयस्थां । व्याप्त क्षित्रम्भिक करते एक शिमात क्षित्रम्भिक प्राप्तिक क्षित्रम्भिक क्षित्

IF space #

1 SENDES 7 6 1 BOCK

किए हुए। किएक क्षित्रका क्षित्रकालका क्षित्रका क्षत्रका क्षित्रका क्षत्रका क्षित्रका क्षित्रका

BUSINE MINIMAND BUSINESS BUSINESS BEST COMPANY WITHOUT

अखोषं शुक्रक कारणा ' मैंसम्हरकं शुक्रक दामणा। क्षुत्र काल मवेषांव मरमातेष्वे कालकं वर्षेश्वां द्रापट्याद्रकं वैद्याद्र द्रापु,। द्वित एमएम मण्डे वेष्यपाद्रकं मामणां-व्याद्रकः कारणा विभाव क्षित्रकः क्षित्रकः कार्याः विभाव क्षित्रकाणाः विभाव क्षित्रकाणाः विभाव क्षित्रकाणाः विभाव क्षित्रकाणाः विभाव क्षित्रकाणाः विभाव विभाव विभावताः व प्रकार अग्राव अदम्बा अद्यासकारों अस्पार कर्यं द्वार स्वकतं द्वार श्रिकं व्याप्त अग्राव क्षाया विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त व्य

१र्द व्यवित्यत्भे भूवते अन्ता अन्ता।

**डिमामारी** 

रत्यद्विदात्र ।

अवस्ति भ्रिम वोबज्वेशुनु भेवं अस्तिमंत्री दम्युवं श्रम स्टरमि हिनार्थ। स्टिएरं स्ट्रिं स्थितं क्रेशि र्वेशि प्रथितं प्रिमेरं स्थितं अस्ति स्थितं अस्ति क्रियं स्टिएरं स्ट्रिं स्थितं क्रेशि रव्ये प्रथितं क्रियं स्थितं स्थितं अस्ति स्थितं अस्ति स्थितं स्थितं स्थितं स्थितं रेक्सिमेरं पर्यक्षकृति । का अगाद म्हरामा। अञ्जीनेषा उपाप : मकातात (एपद माअका, पर्यामेषा वह प्रथा को ये अगाव्यक्षित्।

भम्पृ देशिष्ठ इक्ष्मेटिश। पर्वेप कप्पत्त् । येद स्वेंसंपुरं कुरुवोक्ष्यदिः (क्रिप्टम्- स्विम् कुरुक्षेत्रेक्षेत्र) शुक्षि संस्माप्तिं कृष्ण त्यांत्रे मध्यं क्ष्मेत्राभींते सप्त क्ष्येत्र दृष्णा अक्षु पर्वेप त्येत्र अक्षेत्र त्यिष्टिक्षम क्षाक इक्ष्य। येषु मर्क्षिक्षं क्ष्मित्र कृष्णिक विषय क्ष्येत्रिक्षेत्रे अक्षेत्र कृष्णे क्ष्मेत्र क्ष्मेत्र विषयः। येद्र व्या विषयः सम्भ नक्ष वेष्मेत्र विषयः। विषयः सम्भ नक्ष्ये वेष्मे

कारकारं समान- श्रिया कार उत्विद्धिया। कार्या कार्या प्रमुद्ध कार्या कार्या कार्या हुत कार्या कार्या हुत्य कार्या कार्या

> खिर कांड्यिय ८३४३। असंबं एक्नाने रिटार्ट- ८४ एपु मार्गेसि

# space#

में प्राद्य प्रवेशिक प्रकार के प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त

क्रिया साम अवाद 219। अभीत्यां सेंद्री एडं। व्याद्या साम अवाद आपक्षेप व्याद्यीत्यां सेंद्री एडं। व्याद्या १४ अप अव्यु व्याद्या मार्च मार्च अप्राप्त आपमा - अनु क्रियामुन अवादां अप्राप्त १४ अप्राप्त व्याद्यामा साथ मार्च मार्च आपमा आपमा अप्राप्त आपमा अप्राप्त अप्राप्त व्याद्यां साथ अप्राप्त अप्राप्त व्याद्यां साथ अप्राप्त साथ भूमा स्थित स्थाप अप्राप्त अप्राप्त व्याद्यां साथ अप्राप्त अप्राप्त अप्राप्त व्याद्यां व्याद्य व्याद्यां अप्राप्त व्याद्यं व्याद्यं साथ अप्राप्त अप्राप्त व्याद्यं व्याद्यं अप्राप्त व्याद्यं व्याद्यं अप्राप्त व्याद्यं व्याद्यं अप्राप्त अप्राप्त व्याद्यं व्याद्यं अप्राप्त व्याद्यं व्याद्यं अप्राप्त व्याद्यं व्याद्यं

रची स्वयंत्रिक उन्तरमः, क्रीरकाश्चित्रक बराजुन कड्या क्रिक्ट का व्याप्तर व्याप्त्य मेन्तरं व व्याप्तरं क्रिक्ट विकाश्चित क्रिक्ट विकाशित क्रिक क्रिक्ट विकाशित क्रिक क्रिक्ट विकाशित क्रिक क्रिक्ट विकाशित क्रिक क्रिक्ट विकाशित क्रिक क्

णिम भे अभी अभी आया आया क्षित्र क्षित्र भी अपने क्षित्र का अपाएं। क्षित्र भे अभी अपाएं क्षित्र का भे अपने क्षित्र का अपने क्षित्र का अपाएं। क्षित्र भाग का का क्षित्र का क्षित्र का क्षित्र का का का का अपने का अपने का का अपने का का अपने अपने का अ

अत्र काश्वि-प्रिंशापुरं ज्या प्रेजरं जिलाएटं स्मामाया।

क्षित्र क्षित्री प्राप्त क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र वेश-भेक्ष क्षित्र क्

स्थि। क्षेत्रं क्षेत्रस्यक्षेत्रं याश्रप्तं क्षे। क्षित्रं नम्बदं क्षेत्रंभविष्यं याश्रप्तः (वावः ', याण्याव्या।

टल प्रेमणं मेथ्यम द्यार अवश्व मिटिए।। मेंभिटें प्र मांस्य वैश्व पाक्रपाएं क्रमंद्रांम्। ट्यारें प्र प्रेममोश्य क्रमंद्र प्रिश्व या त्वश्चेष मुद्रं। क्रिंट यांस्यित्योद क्रमंद्रिक प्रवेश्व मांद्रं। विकार यांस्याय्योद क्रमंद्रिक प्रवेश्वमा।

मान एक। काष्ट्र १ क्षेत्रं-स्टब्रेडमं - भाग महार क्षेत्रं ज्या मिट्टा क्षेत्रं क्षेत्रं क्ष्ये क्षित्रं हुन् मार्थेडा मित्रमें पाद-काष्ट्र । अंदिसं क्ष्ये प्रकार प्रकार क्ष्ये क्ष्ये मिल्ले क्ष्ये क्ष्ये मार्थेडा मित्रमें क्ष्ये हुन् मार्थेडा मित्रमें क्ष्ये काष्ट्र मित्रमें मार्थे क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये क्ष्ये मिल्ले क्ष्ये मिल्ले क्ष्ये क

अप्त एड ' अधीयमां ऽ - अ इएए रेज्यायं एक्से एने द्राक्षेत्रं विकेष मेत्र अंद्रेश्व मार्कि ' रेख भारत १५७४ । क्षित्रं शुक्ष क्षेत्रं म्यांग । प्रमाणिक एक्टरं क्षित्रं प्रमाणिक । प्रदेश क्षेत्रं क्षेत्र

्य भे खिलांशी, बत्यां । - त्या एं डे मेंच नास इटमिट्ट हे उपने करेंग उपने क्षार्ट। - (क्या पंडे मेंच नास इटमिट्ट हे उपने करेंग उपने क्षार्ट। - (क्या पंडे हे क्षार्ट क्षार्ट क्षार्ट क्षार्ट)

लिया का मान का माने के मिले हैं।

किलिहिल्प असं शक्ताका। आलंड करंत अप क्यंड क्येड बलाए। याप क्यंड अन्यात काएण अदील क्रंड अनुमें। अधिसंतिक प्रापत एएम क्यंड प्रेसिट प्रापत क्यंड क्यंड प्रापति अनुमें। अधिसंतिक प्रापति क्यंड क्यंड क्यंड प्रापति क्यंड क्यंड क्यंड क्यंडिंग क्यंडिंग । अधिसंतिक प्रापति क्यंड क्यंडिंग क्यंडिंग — १ केल क्यंडिंग क्यंडिंग । अधिसंतिक प्रापति क्यंडिंग क्यंडिंग — १ केल क्यंडिंग क्यंडिंग । अधिसंतिक क्यंडिंग क्य अनं क्रमन्त कार्यक्रिक ट्यूटक उठ इत्यापांच केटलें। क्रियां कारजीतेत्वाचा करांच विसेश क्षितांच स्थावंत्रा प्रांच कारव्या कार्य्य कार्यांचा क्रियांचा क्षितां कार्यांचा कार्यांचा कार्यांचा क्षित्रांचा कार्यांचा क्षित्रंचा कार्यांचा क्षित्रंचा क्षित्

अर्थन क्ष्मिक अर्थन श्रुक्ति क्ष्मिक क्ष्मिक

क्य प्राप्ते केलन हमार्थ स्थानं विकासना ।

कारकेस ३३८ अगुमुल्वे द्वस्तम-सम्म ने-इट्स द्विश्य खंदेय प्रधायम्य) भारतेस्त स्वास्त्र १३८ म्यान्त स्वास्त्र स्वास्त

सार्रेड १३५१ थ्रिट्रिय उट्ड । यावम श्रिका लांड क्याल : उट्ट साट्ट्या। क्षुप्र क्रायत एएट इटल स्थिपांड । मावम यिक इटल केट्ट्या स्थायता लिएड विभा होटल क्ष्यूचाल कार्य बुक्य स्थांड श्रेपेड्ये लिएड्य क्ष्यूचा न्यायेयां हें द्रीयक। प्रदे उत्यापा ताम खुद्रमें उटनं उड़ा क्ष्यूचित्तं एक्या मामार्थ के द्राय क्ष्यूचालांड इतिहं- अभा क्ष्यूच्या मामेश्वरी मामेश्वरी व्यायायां मामेश्वर के द्राय विद्यावत्त्रे

न्यावंसा। सा वंद्या खट्टं आया - येत्र शिक्षांचे असाम स्ट बंद्र आत्र केराड्ट म्यु शुत्र धार्था अस्ट्रेखं दुस्सेंग ज्याना ब्याह्य शिक्षि सार्थ्य केराड्ट असम्पाद्धं देख्दं प्रमाण, क्षित्रात्मार्थ्यं कार्या हार्या ह्ये

कारणाणिकं उठने पुरंग दिन। भारत्न कृष्य क्षापं वारके वारंग। अत्यक्षित्रा केष्ट्र क्षित्रके क्रान्त द्वार्ष्ट्र सावेश्व हात्व एवार्थ्य। क्षाप्ट प्रांचित्र क्षित्र क्षाप्ट क्ष्ये क्ष्ये

माया एक आसारक नामक परंग। या करवाहीं जा प्राप्तिं कम कमानेंड एवं कंडन एवं त्रिमा । ट्या ग्राहिसंड ११ करवाहीं जा प्राप्तिं कम कमानेंड एवं कंडन एवं त्रिमा । ट्या ग्राहिसंड

Court. - young sorming was so cast

अग्रामाल्ड अते पटले भारपट् अते के के का एक हैं। का उक

मिशा अस्तामका हिंदे एक एवं क्षिया आप्ता होती काणी मिहिंदे अस्ता महार्थे प्रेम्पापंत हात एक एकं प्रशास करता क्षिया क्षिया के मिला मिला अधः मित्राता ( क्षियुण्यं क्षित हमा क्षिया क्षिया कार्य अपूर्ण हिंदे क्षिया क्षिया मा। मिंद्रीट्य प्रित्त हमा क्षिया क्ष्या क्षिया क्षिय क्ष्य क्षिय क्ष्य क्षिय क्षिय क्षिय क्षिय क्षिय क्षिय क्षिय क्षिय क्ष्य क्षिय क्ष्य क्षिय क्षिय क्षिय क्ष्य क् कर्म प्रांत क्रिट्म प्रेटम। उत्पृष्ट ट्यम अरू-ब्राय अर्थ अरूप अरू वेटम स्टिंग वटम के प्राप्त व्याप्त। वटम अन्य भिरा अर्थ्यम व्यांचे विशेष- वर्म अपस्थिषि या वर्म विकाशकीन

भेकर, ७० अस्ति। वार्तिकार।

मध्य, वैरोग क्राञ्चाप । मध्यिक्ष्यं कार्य्या। त्याप्य वैद्या विष्ण विष्ण माण्या। कार्या प्राप्त प्राप्त वाल्यकावं स्थाति प्राप्त वाल्य कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य

्रियात एक्सा हे क्रिक्स का क्रिक्ट क्या। अर्थात एक्सा । जिरमाकार क्षेत्र मक्षेत्रका उन्न क्या क्ष्य । क्रिक्सिन इंक्सि हिंद आने एन्ड क्रिक्स कृष्ट त्याकंट्य (मुक्त क्रिक लाडब क्रिक्ट्य) अर्थिय भान संत्याम शिक्षम (क्ष्यम ३ वूर्ल (याकं) । जिद्दम्हे। एमडि रिक्र भाषित क्रिक्सिन । क्रिक्सिन १८०० प्रकार १८०० प्रकार विकार वि

रिम्मल्या आधुरं अनेमा त्य व्यक्त विकास अव्यक्त व न्यामण वाहात त्याद्वारं भड़्या भवाक जाउटवं काराट वेष्यात्वल द्या। मस्त्राद्ध विद्यात त्याद्वारं भड़्या भवाक जाउटवं काराट वेष्यात्वल द्या। मस्त्राद्ध द्याता त्याद्वारं भड़्या भवाक जाउटवं काराट वेष्यात्वल द्या। मस्त्राद्ध विवास व्यक्ति विकास भवाक व्यव्यक्ति विकास अवस्थात्व द्या। मस्त्राप्त्र अंद का द्राइअम नेश्वर ज्यान के खाना के स्थान

sale same place

मार्य कार्य हैकरत किया कर है। है अब महिम्स किति गार्ड। मार्जि किर लाब्या। प्रह्मां महत्ता नेति हिला निमा ला हिंदि साहित यात्राह्मी हतिर्देश वाहरता- त्याव कार्य त्याद त्या हां एक मंत्री अनितार हिंगाती अवितार रामा 'श्वामाता हिंगा हिंगा है। ENE PANIE PE, RAMESK ENES SE EST LESSENCE ENCE ZEE ESTE EN EN स्मित कराई तराम प्राप्त अवस्थित अपहां हात प्राप्त । (असे अपहोंक

अविष्य देश आहरत असे ने के के मेरि (क्याका मा

THE EMERICA EVENT EN PRIME गाम लाया किल्लि अभूगार र स्थान विद्याल अपूर्त मुक्त में प्राथन पंदाक मारा महार क्रिके महार हिंदा है। हिंदी कार्य के महार महार है عدود ( ( وي العلمالة في العام ( المعلم على العلم العالم المعلم المعلم على على المعلم THE FEET CONSIGNATION AND STEAMENT , MENER ELES SOUTH , CONSIGNATION , CONTRACT SANDERS CON عنها في ما الله والمال عديد المالية ويورو المالية الم THE ENGRYME IN THE ENGINE I THIS HERRENE WIN فالكله فالله فالمال المالية عالمال المالية ال भवारमाय क्याम के क्या क्या १३ साराभाव प्रकृष स्टाम स्ट्राहिन। भवारम्भराव राज संकृत। तो हारहरू भारत्याव क्याम के क्या क्या क्या विशेष-वारम्भणण क्या स्विक्त स्वि क्या मिक्यांस

यभि (प्रकारक प्रां)

प्राप्त संघर प्रियं क्षिणंकिए। यहां योम्प्रांत्र व्यक्षिया। यहां प्राप्ति व्यक्षिय प्राप्त प्राप्ति व्यक्ष्य प्राप्त प्राप्ति व्यक्षिय प्राप्ति व्यक्षिय प्राप्ति व्यक्ष्य प्राप्ति व्यक्ष्य प्राप्ति व्यक्ष्य व्यवक्ष्य व्यक्ष्य व्यक्ष्य व्यक्ष्य व्यवक्ष्य व्यक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्य

एट (शुर अन अपहंडमं स्थान। टाया के क्षिण उट्टोंग्य पा केश्रिम्पंड तुर ज्या क्षिण आवेश्वन। पिरिक्संड एड़ि - टोक्संड द्वाम (ख्य काल म्यूड्रें च्याणी के ताल। क्षि द्वाकाम् टाया। इंदिक्य स्थामक क्रिया इत्वेद्धा अविक्रा का उपल १ क्षिण द्वा देशिय विकार त्या है विक्रा स्थान क्षिण के विकार में विक्रा के क्षिण के प्रवित्त के प्रवित्त के प्रवित्त के प्रवित्त स्थान के क्षिण के प्रवित्त के प्रवि

पड-मेड्रिन क्रेक काराम पडमें अंच कार्य व्यक्त व्यक्ति। राष्ट्र माम हमामे सेम'- प्रमित कुरम्या कार्य एक प्राप्त क्षिण्यहा ज्याम्पर्का कंत्र कार्याचे म्पलम क्षिण कुरम्या हो व्यक्ति। व्यक्ति- लाक्ष्याचे क्ष्याच्या कुरम् व्यक्ति कार्या हो व्यक्ति। प्रिया है यायपां प्रमा आमा आमा। व्यापा क्षेत्र क्षायपां है हारा है हार के यायपां के क्षेत्र क्षायपां के क्षेत्र क्षायपां के क्षेत्र क

क्रायाक क्रिक हमाना अल्ब इक्टिक अति क्रिक व्यापान म्लेम्बर्गा जातान क्रिके क्रिकात द्वापान अल्बर इक्टिक अति क्रिके व्यापान म्लेम्बर्गा जातान क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट इक्टिकेट अति क्रिकेट व्यापान क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट

स्थिति उद्या 'द्रस्य विराध अपक असेता)

स्थिति प्राप्त अपका स्थिति हम्मा स्थिति व्यक्त स्थिति स्थानि स्थानि

(शास्तान भारत वा केस्रामेत क्यंक लक्ष्या। विशवक लवाक या।

The Space #

२००४, १० रे ज्याहारी।

ब्लां आहा। अषः मनेजां प्राप्त अधियातं मूच्या इएया

कुरायं काका द्विक्साद्वं कर्ड दुष्णिक स्थाः बाह्य क्षात्रका स्थि । संभां कर्ट स्थायं तां के अपमानि क्रियां क्षात्र प्राप्ति स्थायं विद्यं क्षित्र क्षित्रका स्थायं स्थायं स्थायं क्षात्र क्षात्रं क्षा

> करी कर्भ आदि खिता है उस है। आ हम, मांगे जादि खुदिम स्पू

> > उत्म अवक्र या ।

सिक्षेकिक से सिक्षेकिक से सिक्षेकिक से सिक्षेकिक से सिक्षेकिक से सिक्षेकिक से सिक्षेक्ष से सिक्षेक्ष से सिक्षेक्ष से सिक्षेक्ष सिक्ष सिक्षेक्ष सिक्ष सिक्षेक्ष सिक्ष सिक्षेक्ष सिक्षेक्ष सिक्ष सिक

## ५००५ । ५ ला त्मलेखा ।

लायं सुन् स्मितिका त्यापार बद्ध तन्या मिलाक। मध्याव विम्रावन अध्यापके में दिल्ली बेटम के अधिक प्राप्त के के के मार्थ अभितास आदमाना के अगम मुर्च करता वाया कितार माराह करता प्रति है वियेरेतरं हम्बद्धे नियम्बि का। त्यामान आयमन आंभवीतन यादी प्रकृति किया हिया नाम परवर द्यामा । साम मारांड मेक्ट हुम्मे किया साम । साम मारां कार्यं कार्यं कार्यं कार्यं कारं अम्बन्द्राकांत वर्षेत्राक्ष मद्दर अप्रमानी र्याति। य अविश्वनद्द महिला बन क्षाकृत श्रीवान करनेहिर । व्यविता नावभागी श्रेम अ दरेत गारा।

जायात मन्यान मरभन हेरीन मराम कियाता किरियो है। न्याम्भाष्यं सद्ये दिन्दा प्रज्ञातंत्रं मानावन्यानामाना उद्ये दिश राद्रका क्षा तिकाइका अटल कराट अठाम मिक्सिक क्षेत्र कार्य विश्वास्त्र कार किला आछा रिकटन प्राहा (यह तरे जिल्लासकर जातन मर्छर) किल ENGRAPH ENGRAP BOUNDANIES

ग्रेम्बरं राष्ट्रमत्तुं अप्राध् सारा खिर्म्यर प्रकार । रेक्स र्यक वर्षण का आरे कर यो न पटन ह्या मार्

अभिणां कामार्थ कामार्थितं कार्ष आपार कार्या विद्या एकोर दापा इमामाकाम उर्वासि। एवं शवंसिटक मनामें माराचा। किवे किवान-अवत कारक्य ज को मनुस्य कारक अस्मित हिर वार केरी मा जा एके द्यानव सार्या मार्था में का का विकास महत्वतक विभी करते त्यां का प्रावंदिया

Approver - STEATER (

उक्त रिक्मिटिया कप्ता, विश्ववित्व देश कर्म क्षेत्र के क्षेत्र के क्षेत्र क्

म किक्क म अप्रांद्र आप त्यद्र आर्थ प्रश्ला में अपर्या मा अप्रांद्र स्था में अप्रांद्र आप्रांद्र आप्रांद्

स्याप्यमी स्टिंग व्यक्ति। व्यक्तिक्षेत्रीं प्रित्र प्रभावन्त्री। शिर्म स्परापः । क्षित्र क्ष्या व्यक्ति विकास माना काम्मीचा प्रदक्ष प्रकार माना काम्मीचा प्रदक्ष प्रकार के अनुपादिवादम्भाम्या । व्यक्ति विकास काम्मी काम्मीचा प्रदेश के विकास काम्मी काम्मीचा विकास काम्मीचा विकास

अधिक भार क्यां का कार्या के ने कार्य कार्या होगा अधित के कार्य के कार्य कार्या होगा कार्या के कार्य के कार्य कार्या होगा कार्या के कार्या कार

(নচিব্ৰু)

अध्यक्ष्य भं। ति उपाक शुर (य. साम्माक क्ष्मिक क्ष्मि

## । इस्ता हरी हर कामारक काव

अर्थिक भिर्मित्रण हिर केता सम्म काम्या मान्यल इट्रांटिय ' एड्र क्रास्टियं क्रा श्रम् वरंख स्था हिराय ' क्रांटियं हार क्रांटियं । या क्रांटियं साम्ये क्रांटियं साम्ये क्रांटियं क्रांटिय

व्यक्षितं कुन्मण व्यवश्च क्षिये कंग लेखा देशिष्ट क्रिंत्रेश्यम । ... (१३ग्राष्टावं पृष्टि व्यक्ष्यमा । ... (१३ग्राष्टावं पृष्टि व्यक्ष्यमा । ... (१३ग्राष्टावं व्यक्ष्यमा । अभ्यक्षितं प्रमान प्रक्षितं क्ष्यमा । अभ्यक्षितं प्रमान क्ष्यक्षितं प्रमान क्ष्यक्ष्यम् । अभ्यक्षेत्रं व्यक्षितं व्यक्षेत्रं व्यक्षेत

त्याप यमे अवस्थां तमेमार कृत्या थि अर्थित श्रिक्ट लिक्ट के मित्र क्षिक प्राथमी ।

(अस्मित्रकर माराणां दिसरे मणाए फराध्या।

पुत्रम् आयं अका शाद्यं अंतर्ण दिलं सिर्ण सिर्ण ज्याप्त तिक्री क्ष्यं आया अकार्य स्थाप्त क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं व्याप्त तिक्री क्ष्यं क्ष्यं व्याप्त व्य

मामीलाक मण्यून क्रोंशण शुक्राप्यकां क्या । दृष्टं मणत ताड्डा पा सूच्चे क्यात्रिस्यकं क्यात्मक क्यात्म यां मानं । एक्यात्म ख्या क्यों क क्यांच रिल्योंच जाड्डा क्यारियोंचं सम्बद्धं – प्रामेप्यकं क्षेत्रेड म्यात्माः। क्यांपा त्यां ज्यात्मांचं त्यिष्ट्रकृष्टि शोह्य प्रवेष्ट्रेय व्यव्धित भ्रावं प्रथम् माम्

निर्देश स्थायमा । अधीव नाउ ।

मास्त्रीयेक विश्वितं करण्य किर्वेस्त्र । . इस्ते अप्रा आधारक क्रम कार्य अभित्र इस्त युवं 'क्ष्यकां क्रम्य क्रम प्राणा विश्व मामाम ; अयाद अभित्रं सु: न्याम सामायां मात्रे मैं भिष्टां क्रम्यां में विभावं व्यापां व्यापा में यात्रे अभित्रं सु: न्याम सामायां मात्रे प्रित्यां क्रम्यां में विभावं महारात्रे वेश्व व्यापा में यात्रां मायां मायां यात्रां विभावं मायां विभावं मायां विभावं मायां विश्वे